हुसैन[अ०] मानवता के संरक्षक

तनवीर नक़वी तनवीर नगरौरी, लखनऊ

इतिहास गवाह है कि दुनिया में ऐसा कोई धर्म, कोई झण्डा (अलम, परचम) नहीं हुआ जिसके नीचे सारी इन्सानियत एकजुट होकर आ जाती। मगर हमने देखा कि चौदह सौ बरस पहले एक ऐसा इन्सान दुनिया में पैदा हुआ जिसने करोड़ों साल पुरानी दुनिया का इतिहास बदल कर रख दिया उसने वो सब कुछ सहन करने का फ़ैसला कर लिया जो इसके पहले वाले लाख कोशिशों के बावजूद भी पूरी तरह नहीं कर सके थे इस इन्सान ने सारे अत्याचार सहन करना गवारा किया मगर ये सहन नहीं किया कि एक इन्सान से उसकी इन्सानियत छीन ली जाय। ये इन्सान कोई और नहीं ईश्वर के दूत (नबी[स०]) का छोटा नवासा हुसैन[अ०] था।

सन् 680[ई०] में हुसैन[अ०] के सामने एक ऐसा ज़ालिम, दहशतगर्द, इन्सानियत का दुश्मन, जानवर यज़ीद इस्लाम के नाम पर अपनी हुकूमत का नंगा नाच, नाच रहा था उसके डर से एक तिहाई दुनिया अपना सर उसके सामने झुका चुकी थी वो चाहता था कि हुसैन[अ०] भी उससे हाथ मिला लें उसके सामने अपना सर झुका दें। हुसैनअ० का हाथ तो बढ़ा मगर यज़ीद के हाथ की तरफ़ नहीं बल्कि उसके चेहरे पर तमाचा बनकर। हुसैनअ० को अपने इन्कार का अन्जाम भी अच्छी तरह मालूम था वो जानते थे कि बदले में हमें, हमारे चाहने वालों और हमारे घर वालों को उसके हर तरह के जुल्म (अत्याचार) का सामना करना पड़ेगा। हुआ भी वही सभी चाहने वालों के सार काट दिये गये भाई भतीजों भाँजों को शहीद कर दिया गया ज़ालिमों ने अपनी हैवानियत की हद कर दी, इन्सानियत के दुश्मनों ने हुसैन[अ०] के छः महीने के बच्चे को भी तीर से शहीद कर दिया घर की पर्देदार औरतों के सरों से चादर छीन ली कर्बला से कूफ़ा और कूफ़े से शाम तक रस्सी में जकड़ कर ले जाया गया। ये सब हुआ मगर हुसैन की इन्सानियत के नाम पर दी गयी ये क़ुर्बानी रंग लाई और तब से आज तक जब भी जहाँ भी हुसैनअ० के नाम पर इन्सानियत को आवाज़ दी जाती रही है इन्सानियत हुसैनअ० के झंडे (अलम) के नीचे एकजुट नज़र आती है।

हुसैनअ० के झण्डे (अलम) के नीचे आने वाला हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, शिया, सुन्नी बाद में होता है सबसे पहले वो सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्सान होता है।

यही है इन्सानियत की जीत — यही है हुसैनियत।